कार्यशाला में विद्यार्थियों को दिए किसानों को प्रशिक्षित करने के टिप्स

औषधीय खेती से होंगे मालामाल

विद्यार्थी कमरों से बाहर निकलकर खेतों में जाएं

जबलपुर @ पत्रिका

patrika.com/city

उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान (टीएफआरआई) में आयोजित कृषि वानिकी एवं प्रबंधन कार्यशाला में छात्र-छात्राओं को विभिन्न क्षेत्रों में जलवायु, बाजार और लोगों की जरूरतों के अनुसार कृषि के साथ पेड़ और औषधीय पौधों को उगाकर फायदे उठाने के तरीके बताए जा रहे हैं।

संस्थान की कृषि वानिकी वैज्ञानिक डॉ. नंदिता बेरी ने महाकोशल क्षेत्र में कृषि वानिकी की संभावनाओं पर जानकारी दी। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी कमरों से बाहर निकलकर खेतों में जाएं और किसानों को समझाएं। इस दौरान डायरेक्टर यू प्रकाशम ने छात्रों को नसीहत दी कि किसान के लिए आपसे मिलकर अपनापन महसूस हो ऐसा चरित्र बनाएं।

पुस्तक का विमोचन करते अतिथि और संस्थान के सदस्य।

कलिहारी उगाएं, बनती है कैंसर की दवा

उन्होंने बताया कि बड़े किसान कैंसर की दवा बनाने में उपयोगी कलिहारी की खेती कर सकते हैं। यह बांस और सागौन के नीचे उग जाती है। यह पौधा जहरीला होता है। इसे उगाने के लिए वन विभाग से अनुमति लेनी पड़ती है। यह पांच साल में तैयार होता है और महंगा बिकता है पर ज्यादा मात्रा में तैयार होने पर ही इसकी बिक्री संभव होगा।

सागौन के बीच उगाएं हल्दी

सागौन के पेड़ों के बीच हल्दी उगाई जा सकती है। वहीं वर्षा आधारित क्षेत्र में सीसम के बीच मक्का तैयार हो सकता है। मक्का के दाम आजकल बाजार में काफी तेज हैं। इस तरह अनेक झाड़ व औषधीय पौधे हैं तो उपयोगी साबित हो सकते हैं। मेड़ों पर पेड़ लगाकर खेती करें तो किसानों की तस्वीर बदल जाएगी।

कम पानी हो तो बच लगाएं

इलाहाबाद कृषि विवि और जवाहरलाल नेहरू कृषि विवि से संबंधित महाविद्यालयों के छात्रों को सम्बोधित करते हुए डॉ. बेरी ने कहा कि जहां पर ज्यादा पानी जमा होता है, ऐसी भूमि पर बच और भान की औषधीय खेती की जा सकती है। बाजार में इसकी अच्छी मांग है। जहां पर पानी की दिक्कत है कि ऐसे स्थान पर बेर और पलास के पेड़ ज्यादा होते हैं। इन पेड़ों के बीच लाख की खेती की जा सकती है। लाख से चूड़ियां बनाई जाती है। जिसकी अच्छी कीमत मिलती है। यू प्रकाशम ने बताया कि खेती का मतलब अब बदल गया है। आजकल किसान एक ही मौसम में दो तरह की खेती कर लाभ ले सकता है। इसकी जानकारी भी उन्हें दी जाती है।

patrika epaper editions Wed, 03 June 2015